वे इसमें भाग नहीं ले सकेंगे। इस तरह हम उनके गुणकारी और लाभकारी सुझावों से वंचित रह जाएंगे।

डा० बलदेव प्रकाश : क्या माननीय मंत्री जी के ध्यान में है कि यह जो एडल्ट्रेशन हो रही है वह एडल्ट्रेशन बिना इंस्पैक्टर्स की कनाइवेंस के नहीं हो सकती है। यह जो आप नया एक्ट बना रहे हैं जिसमें एडल्टरेटर्स के लिए आजीवन कारावास का प्रोविजन होगा, क्या आप उसमें एडल्टरेटर्स के साथ सुपरवाईजर्स और इंस्पैक्टर्स को भी शामिल करेंगे जिनकी लापरवाही के कारण ऐसी ड्रग्स बनायी जा रही हैं? उनकी लापरवाही के बगैर तो यह हो ही नहीं सकता है।

श्री राज नारायण : सम्मानित सदस्य ने जो प्रश्न किया है वह बहुत ही महत्वपूर्ण है। अभी हम नये विधेयक पर विचार कर रहे हैं, उसकी समविदा अभी विचाराधीन है। अभी तो पुराना एक्ट ही लागू है। हमारा प्रस्ताव है कि ऐसे लोगों को कैपिटल पनिशमेंट मिले। बिल द्वारा इस सदन के सामने आयेगा उस समय डा० बलदेव प्रकाश अपना संशोधन रख सकते हैं। अगर उस संशोधन को सदन मान लेगा कि उसमें सुपरवाइजर और इंस्पैक्टर्स को भी शामिल कर लिया जाए तो सदन की राय सर्वोपरि होगी और हमें उसके मानने में कोई ऐतराज नहीं होगा। मगर मात्रा भेद और गुणभेद, अर्थात् क्वान्टिटेटिव चेज और क्वालिटिटेटिव चेंज में बराबर हम को विवेक के साथ विचार करके कानून की व्यवस्था करनी होगी।

श्री यज्ञदत्त शर्मा : मैं यह जानना चाहूंगा कि क्या मंत्री महोदय की जानकारी में है कि आयुर्वेद की अनेक शास्त्रीय औषधियों को अनेक प्रकार के नये नाम देकर के उनका निर्माण किया जा रहा है। इस प्रकार से खरीदारों का शोषण होता है और दवाओं का विकृतिकरण किया जाता है? क्या सरकार इसके बारे में कोई ध्यान देगी?

श्री राज नारायण : पंडित यज्ञदत्त शर्मा जी हमारे परम मित्र हैं। पंडित जी के सवाल का जवाब मैं क्यों न दूं यद्यपि इस प्रश्न से उसका सीधा सम्बन्ध नहीं है। (**व्यवधान**) अब अगर खींच कर इसका सम्बन्ध जुड़ जाता है तो बात अलग है। हमने पहले ही सम्मानित सदस्यों को अवगत करा दिया है कि आयुर्वेदिक और यूनानी दवाएं बनाने के लिए हम रानीखत में एक कारखाना खोल रहे हैं और वहां हिमालय की पहाड़ियों पर जितनी जड़ी बूटियां हैं उनकी खोज करके, उनको सुधार करके समुचित रूप से अच्छी दवाओं का निर्माण किया जाएगा। जितने बड़े पैमाने पर फैक्ट्री में दवाओं का निर्माण होगा उतना ही ज्यादा उनका गुणकारी, लाभकारी प्रभाव होगा। जहां तक मिलावट का प्रश्न है उसको रोकने के लिए हम लगातार प्रयत्नशील है।

India Population Project

*667. SHRI P. RAJAGOPAL NAIDU: Will the Minister of HEALTH AND FAMILY WELFARE be pleased to state:

(a) whether Government launched India Population Project;

(b) if so, with whose assistance?

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री (श्री राज नारायण) : (क) जी, हां।

(ख) विश्व बैंक के जरिए अन्तर्राष्ट्रीय विकास संघ और स्वीडिश अन्तर्राष्ट्रीय विकास प्राधिकरण की सहायता से।

SHRI P. RAJAGOPAL NAIDU: May I know the details of the project?

श्री राज नारायण : मैं फिर आपकी शरण में आ रहा हूं। आज तक किसी मंत्री महोदय के उत्तर से दस साल तक संसद् में विरोधी पक्ष घबराता नहीं रहा लेकिन हमारे उत्तर से विरोधी पक्ष इसलिए घबराता है कि वह सोचता है कि तीस साल तक सारे

कारनामे जो स्वास्थ्य विभाग के रहे हैं कहीं उनका उद्घाटन न हो जाए। इसलिए वह घबराता है। जितना सवाल पूछा गया है उसका उत्तर आप सुनें।

माननीय सदस्य ने पूछा है कि जो विश्व बैंक के जरिये या स्वीडिश अन्तर्राष्ट्रीय विकास प्राधिकरण के जरिये रुपया मिलता है उसको कैसे कैसे कहां कहां ब्योरे से खर्च किया जाता है।

डा० कर्ण सिंह : संक्षिप्त बता दें।

श्री राज नारायण : संक्षिप्त नहीं होता है।

डा० कर्ण सिंह : समद में संक्षिप्त करना पड़ता है।

श्री राज नारायण : जो छिपाना चाहता है, जो देश की जनता को गुमराह करना चाहता है वह संक्षिप्त करता है जो सदस्यों को सच्ची बात बताना नहीं चाहता है वह ऐसा करता है।

भारत जनसंख्या परियोजना एक प्रायोगिक परिवार नियोजन परियोजना है जो विश्व बैंक के माध्यम से स्वीडन सरकार और अन्तर्राष्ट्रीय विकास संघ के सहयोग से उत्तर प्रदेश के छः जिलों अर्थात् लखनऊ, सुलतानपुर, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, प्रतापगढ़ और रायबरेली तथा कर्नाटक के पांच जिलों अर्थात् बंगलौर, शिमोगा, चित्रदुर्गा, कोलार और तुमकुर में चलाई गई है। एक करार के अधीन पहली अप्रैल 1973 से पांच वर्ष की अवधि के लिए परियोजना के चलाने हेतु स्वीडिश अन्तर्राष्ट्रीय विकास प्राधिकरण के जरिये स्वीडन सरकार ने 106 लाख डालर का अनुदान दिया है तथा अन्तर्राष्ट्रीय विकास संघ ने 212 लाख डालर का ऋण दिया है। भारत सरकार को सामान्य पटर्न के अनुसार परियोजना जिलों में परिवार कल्याण कार्यक्रम को नियमित रूप से चलाने के लिए सहायता जारी रखनी होगी तथा अतिरिक्त धन को विशिष्ट साज सामान हेतु उपयोग में लाया जाएगा। मैं विस्तार में नहीं जा रहा हूं। मैं माननीय कर्ण सिंह के सुझाव को मान कर चल रहा हूं। परियोजना के मुख्य घटक निम्नलिखित है;

विभिन्न स्तरों पर परिवार कल्याण और प्रसूति एवं शिशु स्वास्थ्य सेवाओं का एकीकरण करते हुए नगरीय और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में प्रसूति पर आधारित परिवार कल्याण कार्यक्रम।

उत्तर प्रदेश के चार जिलों लखनऊ शहरी और ग्रामीण क्षेत्र, सुलतानपुर, मुजफ्फरनगर और प्रतापगढ़ तथा कर्नाटक के तीन जिलों—बंगलौर शहर और गांव दोनों, शिमोगा और तुमकुर में भारत सरकार का एक समुचित पैटर्न कार्यक्रम (**व्यवधान**) सुन लीजिये, क्यों घबरा रहे हैं। प्रत्येक राज्य के दो जिलों–उत्तर प्रदेश में रायबरेली और सहरानपुर तथा कर्नाटक में चित्रदुर्ग और कौलार में गहन ग्रामीण कार्यक्रम, एवं लखनऊ (उत्तर प्रदेश) और बंगलौर (कर्नाटक) में नगरीय कार्यक्रम। आगे और अधिक सुविधाओं की व्यवस्था, प्रेरणा, प्रशिक्षण, सेवाओं और अतिरिक्त फील्ड कर्मचारियों के रूप में की जानी है।

शुरू में एक विशेष पोषाहार कार्यक्रम रायबरेली के ग्रामीण गहन जिले के एक ब्लाक में तथा बाद में, भारत और अन्तर्राष्ट्रीय विकास संघ। स्वीडिश अन्तर्राष्ट्रीय विकास संघ के द्वारा संयुक्त समीक्षा के पश्चात् तीसरे वर्ष में इसका विस्तार किया जाना है। इस कार्यक्रम के द्वारा यह निश्चय किया जाना है कि पूरक पोषाहार का परिवार कल्याण सेवाओं को स्वीकार करने में प्रोत्साहन स्वरूप प्रत्यक्ष रूप से क्या प्रभाव पड़ा...

श्रीमन्, सम्मानित सदस्य जान लें यह रुपया बाहर से लिया जाता है। तो उस रुपये का सदुपयोग होता है या दुरुपयोग होता है इसको सदन और सदन से बाहर दुनिया के लोगों को बताना आपका कर्त्तव्य है। अभी विश्व बैंक के लोग आये थे 1966 में जांच करने। यानी जो पौष्टिक आहार बच्चों को दिया जाता था रायबरेली में वह पूर्व सरकार ने बाद में देना बन्द कर दिया। उसमें दिया जाता था गेंहू का आटा, चने का आटा, मूंगफली, गुड़। यह सब मिलाकर के बच्चों को खाने के लिये दिया जाता था। मगर बच्चों के नाम पर चच्चे खा गये।

इसलिये मैं यह कहना चाहता हूं कि विश्व बैंक मिशन अक्तूबर 1976 में परियोजना के विभिन्न क्षेत्रों में किये गये कार्य की प्रगति की समीक्षा करने के लिये भारत आया था और उसने भारत सरकार तथा कर्नाटक और उत्तर प्रदेश की राज्य सरकारों के अधिकारियों से विचार-विमर्श किया था। मिशन ने परियोजना क्षेत्रों में समय रूप से प्राप्त की गई उपलब्धियों के प्रति अपनी राय व्यक्त की है।

MR. SPEAKER: I would request both the Questioners and the Minister to be precise and to the point. Otherwise we are taking a lot of time of the House. I am not referring to any particular Member. I am sure, both the Leader of the House and the Leader of the Opposition will help me in this regard.

श्री हरिकेश बहादुर : मान्यवर, मैं आपके माध्यम से मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि बढ़ती हुई आज़ादी को नियंत्रित करने के लिये सरकार अब कौन सी पद्धति अपना रही है और क्या मंत्री जी इस बात का आश्वासन देंगे कि पुरानी सरकार द्वारा किये गये कुकृत्यों को यह सरकार नहीं दोहरायेगी?

श्री राज नारायण : जी, जिस समय से जनता की सरकार आयी है और स्वास्थ्य मंत्रालय का भार मुझको दिया गया है तभी से प्रधान मंत्री ने, जनता की सरकार ने, स्वास्थ्य मंत्री ने, जनता पार्टी ने बहुत ही मज़बूती से कह दिया है कि ज़बरदस्ती, जोर जुल्म के साथ नसबन्दी नहीं चलायी जायेगी। अब हमारे मित्र यह जानना चाहते हैं कि अगर हम ज़बरदस्ती नहीं करेंगे तो परिवार सीमित कैसे होगा? इस का उत्तर देना हमारा कर्त्तव्य है। तो मैं चाहता हूं कि जरा आप भी सुन लें क्योंकि यह सारे देश और विश्व का सवाल है और दुनिया के हर मुल्क के राजदूत आते हैं हमसे मिलते तो यही प्रश्न पूछते हैं कि :

How are you going to control the growth of population ?

यह उनके शब्दों को दोहराया है। मैंने पहले ही कह दिया है कि जब टेंशन होता है तो मैं कभी-कभी अंग्रेज़ी बोल देता हूं। यह हमारी गलती है, क्षमा करें--इस का उत्तर मैं देता हूं कि :

"देखिये ब्रह्मचर्य की मैं शिक्षा दूंगा, स्वास्थ्य मंत्रालय शिक्षा देगा ब्रह्मचर्य की, इन्द्रिय निग्रह की, आत्म नियंत्रण की और योग की। जो प्राचीन पद्धति रही है बच्चे पैदा करने के लिये, पति और पत्नी में, जो मासिक धर्म होता है, उसके कितने दिन के बाद सम्भोग हो, जिससे गर्भ रहे और गर्भ न रहे। यह प्राचीन पद्धतियां हैं। (**अन्तर्बाधाएं**) इसी के साथ-साथ अनेक दवाएं हैं और हमारे जो आयुर्वेदाचार्य हैं, उनसे हमने निवेदन किया है कि वह कुछ ऐसी दवाएं निकालें, जिससे बिना शरीर और स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़े हुए, गर्भ का निरोध हो सके।"

मैं कहना चाहता हूं कि 10,10 लाख की सभाएं हुई हैं और उनमें हमने इस बात को दोहराया है कि हमारे आदर्श राम और कृष्ण हैं, युधिष्ठिर और हजरत मोहम्मद साहब पैगम्बर हैं। राम के दो बच्चे लव और कुश क्यों? भरत को दो बच्चे (**व्यवधान**)

और मोहम्मद साहब के केवल एक बेटी और उसके केवल दो बेटे । इसलिए प्राचीन ऋषियों-मुनियों की बातों को लोगों को समझायें और बतायें कि कम-से-कम संतान रहने से परिवार सुखी रहेगा। (व्यवधान)

MR. SPEAKER : Next Question.

DR. KARAN SINGH : I have a submission to make.

MR. SPEAKER : I have already gone to the next Question.

DR. KARAN SINGH : I want to make one submission. I am not questioning your decision. I am not putting a question. I am just making a submission.

This is a question about India Population Project. It is a very important question. Rs. 60 crores a year are spent on it. We wanted to have some clarifications about this project. The hon. Minister, for 15 minutes, was propagating a very interesting theory on population control. That is also interesting. But that should not deprive us of asking some very important questions and clarifications with regard to the past project.

MR. SPEAKER : There are other ways of raising it also. I am sorry I have gone to the next question.

DR. KARAN SINGH : This is very unfair. (*Interruptions*)

MR. SPEAKER : You are taking away another 2 minutes. I am not allowing.

श्रीमति अहिल्या पी० रांगनेकर : अध्यक्ष महोदय, इस संसद में हम औरतें बैठी हुई हैं, जो भाषा इस्तेमाल कर रहे हैं, यह बिल्कुल गलत बात हैं । इससे आपको बचना चाहिए । यहां औरतें बैठी हुई हैं ।

MR. SPEAKER : I will look into the matter.

SHRI K. LAKKAPPA : This is a very important Question. I want to put a supplementary.

MR. SPEAKER : I am not allowing. (*Interruptions*)

SHRIMATI PARVATHI KRISHNAN : The hon. lady Member has drawn your attention to this thing....

MR. SPEAKER : I will examine the record.

SHRIMATI PARVATHI KRISHNAN : Otherwise, I am afraid, all the lady Members of Parliament would have to boycot the questions relating to his Ministry.

(*Interruptions*)

MR. SPEAKER : I shall examine the record.

चौधरी बलबीर सिंह : ये लोग सैक्स एजूकेशन का समर्थन करते हैं, मगर अब ये एतराज़ कर रहे हैं, हालांकि मिनिस्टर साहब ने कोई ख़ास बात नहीं कही है । (व्यवधान)

SHRIMATI PARVATHI KRISHNAN : This is even more objectionable.

MR. SPEAKER : I shall examine the record and if there are any objectionable things, I shall get them expunged.

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में औषधीय पौधों का सर्वेक्षण करने वाले एकक की स्थापना

*668. **श्री नवाब सिंह चौहान** : क्या **स्वास्थ्य और परिवार कल्याण** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या भारतीय चिकित्सा तथा होम्योपैथी अनुसंधान परिषद् की कार्यकारी परिषद् की 4 अगस्त, 1973 को हुई बैठक में इस प्रस्ताव पर सिद्धान्ततः सहमति प्रकट की गई थी कि अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में औषधीय पौधों का सर्वेक्षण करने वाले एक एकक की स्थापना की जाए ;

(ख) यदि हां, तो क्या उसकी स्थापना कर दी गई है ; और

(ग) यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं ; और इसकी स्थापना कब तक कर दी जाएगी ?